1 संस्कृत व्याकरण

(सन्धि, शब्द-रूप, धातु-रूप, प्रत्यय, विभक्ति, समास)

(क) सन्धि

सन्धि का साधारण अर्थ है मेल। दो वर्णों के निकट आने से उनमें जो विकार होता है उसे सन्धि कहते हैं। इस प्रकार की सन्धि के लिए दोनों वर्णों का निकट होना आवश्यक है, क्योंकि दूरवर्ती शब्दों या वर्णों में सन्धि नहीं होती है। वर्णों की इस निकट स्थिति को ही सन्धि कहते हैं। अतः संक्षेप में यही समझना चाहिए कि "दो वर्णों के पास-पास आने से उनमें जो परिवर्तन या विकार उत्पन्न होता है उसे सन्धि कहते हैं।" **जैसे–**

हिम	+	आलयः	=	हिमालयः
रमा	+	ईशः	=	रमेशः
सूर्य	+	उदयः	=	सूर्योदयः

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि हिम में म के 'अ' और आलय के 'आ' इन दोनों के मिलने से आ होकर हिमालयः रूप बनता है। इसी प्रकार रमा के 'आ' और ईशः के 'ई' – इन दोनों वर्णों के मेल से 'ए' होकर रमेशः शब्द बना है तथा सूर्य के 'अ' और उदय के 'उ' आपस में मिलने से 'ओ' होकर सूर्योदयः रूप बन गया है। इसी प्रकार अन्यत्र भी समझना चाहिए।

यह सन्धि स्वर, व्यञ्जन और विसर्ग भेद से तीन प्रकार की होती है। स्वर सन्धि में कतिपय मुख्य सन्धियों का परिचय पिछली कक्षाओं में मिल चुका है। यहाँ उनसे भिन्न कुछ सन्धियों से परिचय कराया जायगा।

स्वर सन्धि

(१) दीर्घ सन्धि :– अकः सवर्णे दीर्घः

नियम– ह्रस्व या दीर्घ स्वर अ, इ, उ, ऋ/ऌ आये तो दोनों के मिलने से क्रमशः दीर्घ आ, ई, ऊ, ॠ/ॡ हो जाते हैं। **जैसे–**

स	+ अक्षरः	=	साक्षरः	अ	+	अ	=	आ	
मत	+ अनुसारम्	=	मतानुसारम्	अ	+	अ	=	आ	
विद्या	+ अर्थी	=	विद्यार्थी	आ	+	अ	=	आ	
विद्या	+ आलय	=	विद्यालय	आ	+	आ	=	आ	
रवि	+ इन्द्रः	=	रवीन्द्रः	इ	+	इ	=	ई	
कवि	+ इन्द्रः	=	कवीन्द्रः	इ	+	इ	=	ई	**[2020 ZI]**
वधू	+ उत्सवः	=	वधूत्सवः	ऊ	+	उ	=	ऊ	**[2020 ZH]**
गिरि	+ ईशः	=	गिरीशः	इ	+	ई	=	ई	
परम	+ अर्थः	=	परमार्थः	अ	+	अ	=	आ	**[2020 ZN]**
शिक्षा	+ आलयः	=	शिक्षालयः	आ	+	आ	=	आ	
पुस्तक	+ आलयः	=	पुस्तकालयः	अ	+	आ	=	आ	
श्री	+ ईशः	=	श्रीशः	इ	+	ई	=	ई	
अन्तर	+ आत्मा	=	अन्तरात्मा	अ	+	आ	=	आ	
भानु	+ उदयः	=	भानूदय	उ	+	उ	=	ऊ	**[2020 ZD]**
हिम	+ आलयः	=	हिमालयः	अ	+	आ	=	आ	**[2020 ZI]**

(२) गुण सन्धि :– आद्गुणः

नियम– अ अथवा आ के पश्चात् ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ एवं ऌ आ जायँ तो उनके स्थान पर क्रमशः ए, ओ, अर् तथा अल्

हो जाता है। **जैसे–**

तथा	+	इति	=	तथेति	अ + इ	=	ए	**[2020 ZN]**
राज	+	ऋषिः	=	राजर्षिः	अ + ऋ	=	अर्	
रमा	+	ईशः	=	रमेशः	अ + इ	=	ए	**[2020 ZM]**
नर	+	इन्द्रः	=	नरेन्द्रः	अ + इ	=	ए	
देव	+	ईशः	=	देवेशः	अ + इ	=	ए	

(३) यण सन्धि :– इकोयणचि

नियम– यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ तथा ऌ के बाद कोई असमान स्वर आ जाय तो इ-ई का य्, उ-ऊ का व् और ऋ का र् तथा ऌ का ल् हो जाता है। (जिस व्यञ्जन में ये स्वर संयुक्त होंगे वह इन स्वरों के निकल जाने पर हलन्त हो जायगा)। **जैसे–**

अति	+	अधिकम्	= अत्यधिकम्	इ	>	य्	+	अ	=	य	
अति	+	आचारः	= अत्याचारः	इ	>	य्	+	आ	=	या	**[2020 ZI, ZM]**
यदि	+	अपि	= यद्यपि	इ	>	य्	+	अ	=	य	**[2020 ZJ]**
मधु	+	अरिः	= मध्वरिः	उ	>	व्	+	अ	=	व	
सु	+	आगतम्	= स्वागतम्	उ	>	व्	+	आ	=	वा	**[2020 ZH]**
अनु	+	एषणम्	= अन्वेषणम्	उ	>	व्	+	ए	=	वे	
पितृ	+	आज्ञा	= पित्राज्ञा	ऋ	>	र्	+	आ	=	रा	
मातृ	+	आज्ञा	= मात्राज्ञा	ऋ	>	र्	+	आ	=	रा	
ऌ	+	आकृतिः	= लाकृतिः	ऌ	>	ल्	+	आ	=	ला	
इति	+	आदि	= इत्यादि	इ	>	य्	+	आ	=	या	**[2020 ZK]**

(४) अयादि :– एचोऽयवायावः

जब ए, ऐ, ओ और औ (एच्) के आगे कोई स्वर आवे, तो उन (एच्) के स्थान में क्रमशः अय्, आय् तथा अव, आव् हो जाते हैं। अर्थात् ए के स्थान में अय्, ऐ के स्थान में आय्, ओ के स्थान में अव् और औ के स्थान में आव् हो जाते हैं। **जैसे–**

ने + अनम् = नयनम्	**[2017 MI, MN, ZI]**
नै + अकः = नायकः	**[2020 ZH, ZJ, ZL]**
पो + अनः = पवनः	**[2020 ZJ]**
पौ + अकः = पावकः	**[2020 ZA, ZD]**
शे + अनम् = शयनम्	**[2020 ZN]**
भो + अनम् = भवनम्	
नौ + इकः = नाविकः	
गै + अकः = गायकः	
पो + इत्रम् = पवित्रम्	**[2020 ZE, ZG]**

(५) पूर्वरूप :– एङः पदान्तादति

यदि किसी पद के अन्त में एकार या ओकार (एङ्) हो और उसके बाद में अ आया हो तो दोनों ही स्थान में क्रमशः एकार तथा ओकार (पूर्व रूप) हो जाते हैं, चिह्न अ की पूर्व उपस्थिति के सूचक के रूप में (ऽ) रख दिया जाता है। **जैसे–**

हरे + अव = हरेऽव (हे हरि ! रक्षा कीजिए)

विष्णो + अव = विष्णोऽव (हे विष्णु! रक्षा कीजिए) **[2018 AH]**

(६) पररूप :– एङि पररूपम्

यदि अकारान्त उपसर्ग के बाद ऐसी धातु जिनके आरम्भ में ए अथवा ओ हो तो उपसर्ग का अ तथा धातु के ए या ओ दोनों के स्थान पर 'ए' या 'ओ' हो जाता है; **जैसे–**

प्र + एजते = प्रेजते **[2020 ZK]**

उप + ओषति = उपोषति **[2016 SI, 17 MI, MN, 18 AH, 20 ZF]**

हल् (व्यञ्जन सन्धि)

(१) स्तोः श्चुनाश्चुः

यदि सकार या त वर्ग के साथ शकार या च वर्ग आये तो सकार और त वर्ग के स्थान में क्रम से शकार और च वर्ग हो जाते हैं; **जैसे–**

हरिस्	+	शेते	=	हरिश्शेते	(हरि सोता है)	
रामस्	+	चिनोति	=	रामश्चिनोति	(राम इकट्ठा करता है)	
सत्	+	चित्	=	सच्चित्	(सत्य और ज्ञान)	**[2020 ZK]**
सत्	+	चयनम्	=	सच्चयनम्	(सही चुनाव)	

(२) ष्टुनाष्टुः

यदि सकार या त वर्ग के साथ ष् या ट वर्ग आये तो सकार और त वर्ग के स्थान में क्रम से ष् और ट वर्ग हो जाते हैं; **जैसे–**

रामस्	+	षष्ठः	=	रामष्षष्ठः	(राम छठा है)	
रामस्	+	टीकते	=	रामष्टीकते	(राम जाता है)	**[2016 SK]**
तत्	+	टीका	=	तट्टीका	(उसकी टीका या व्याख्या)	
चक्रिन्	+	ढौकसे	=	चक्रिण्ढौकसे	(हे कृष्ण! तू जाता है)	

(३) झलां जश् झशि

झल् (अर्थात् अन्तःस्थ-यरलव और अनुनासिक व्यञ्जन को छोड़कर और किसी व्यञ्जन के पश्चात् झश् (किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण) आवे तो पहले वाले व्यञ्जन जश् (ज् ब् ग् ड् द्) में बदल जाते हैं, **जैसे–**

दोघ्	+ धा	=	दोग्धा	**[2019 CR]**
लभ्	+ धः	=	लब्धः	**[2016 SI, 17 MM]**
योध्	+ धा	=	योद्धा	**[2020 ZG]**

(४) खरि च

यदि झल् प्रत्याहारवाले वर्ण के आगे खर् प्रत्याहार के वर्ण (वर्णों का प्रथम, द्वितीय तथा श् ष् स् में से कोई) हो तो झल् के स्थान पर चर् प्रत्याहार के अक्षर (क् च् ट् त् प्) हो जाते हैं, जैसे–

विपद्	+	कालः	=	विपत्कालः
सम्पद्	+	समयः	=	सम्पत्समयः
ककुभ्	+	प्रान्तः	=	ककुप्प्रान्तः।

(५) मोऽनुस्वारः

यदि किसी पद के अन्त में म् आया हो और उसके बाद कोई व्यञ्जन वर्ण हो तो उसके स्थान में अनुस्वार हो जाता है; **जैसे–**

हरिम्	+	वन्दे	=	हरिं वन्दे
गृहम्	+	गच्छति	=	गृहं गच्छति
दुःखम्	+	प्राप्नोति	=	दुःखं प्राप्नोति

(६) तोर्लि

यदि त वर्ग के किसी वर्ण से परे ल हो तो त वर्गीय वर्ण के स्थान पर ल् हो जाता है। **जैसे–**

उद् + लिखितम् = उल्लिखितम् उद् + लेखः = उल्लेखः

तद् + लीनः = तल्लीनः विद्वान + लिखति = विद्वांल्लिखति

विशेष–अनुनासिक न् के स्थान में अनुनासिक ल् होता है।

(७) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः–

यदि अनुस्वार से परे यय् प्रत्याहार का वर्ण (श, ष, स, ह को छोड़कर) हो तो अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण (अग्रिम वर्ण का सवर्ण, वर्ग का पाँचवाँ वर्ण) हो जाता है। **जैसे–**

धनम् + जयः (मोऽनुस्वारः) धनं + जयः = धनञ्जयः
त्वम् + करोषि (मोऽनुस्वारः) त्वं + करोषि = त्वङ्करोषि
त्वाम् + पश्यामि (मोऽनुस्वारः) त्वां + पश्यामि = त्वाम्पश्यामि

विसर्ग सन्धि

विसर्ग (:) के आगे स्वर या व्यञ्जन वर्ण होने पर विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं–

(१) विसर्जनीयस्य सः

विसर्ग के बाद यदि 'खर्' प्रत्याहार का कोई वर्ण (वर्गों का प्रथम, द्वितीय तथा श्, ष्, स्) रहे तो विसर्ग के स्थान में स् हो जाता है **जैसे–**

हरिः + चरति = हरिस् + चरति = हरिश्चरति
नरः + चलति = नरस् + चलति = नरश्चलति
पूर्णः + चन्द्रः = पूर्णस् + चन्द्रः = पूर्णश्चन्द्रः
गौः + चरति = गौस् + चरति = गौश्चरति
प्रभुः + चलति = प्रभुस् + चलति = प्रभुश्चलति

उपर्युक्त उदाहरणों में विसर्ग को स् होने के बाद 'स्तोः श्चुनाश्चुः' के द्वारा स् का श् हो गया है।

(२) ससजुषो रुः (खरवसानयोर्विसर्जनीयः)

पदान्त स् तथा सजुष् शब्द के ष् के स्थान में र् (रु) हो जाता है। इस पदान्त र् के बाद खर् प्रत्याहार (वर्गों के प्रथम, द्वितीय और श् ष् स्) का कोई अक्षर हो अथवा कोई भी वर्ण न हो तो र् के स्थान में विसर्ग हो जाता है। **जैसे–**

रामस् + पठति > रामर् + पठति = रामः पठति।
सजुष् > सजुर् = सजुः।

(३) (क) (अतो रोरप्लुतादप्लुते)

स् के स्थान में जो र् आदेश होता है उसके पूर्व यदि ह्रस्व 'अ' आवे और बाद में ह्रस्व 'अ' अथवा हश् प्रत्याहार का कोई अक्षर आवे तो र् के स्थान में उ हो जाता है; **जैसे–**

शिवस् + अर्च्यः = शिवर् + अर्च्यः = शिव + उ + अर्च्यः = शिव + अर्च्यः + शिवोऽर्च्यः
सस् + अपि = सर् + अपि = स + उ + अपि = सोऽपि
रामस् + अस्ति = रामर् + अस्ति = राम + उ + अस्ति = रामोऽस्ति
देवस् + वन्द्यः = देवर् + वन्द्यः = देव + उ + वन्द्यः = देवोवन्द्यः
हरे + अव = हर + ए + अव (ए + अ = पूर्ण सवर्ण) = हरेऽव
विष्णो + ए (ओ + ए = अव् + ए) = विष्णवे

उपर्युक्त प्रथम तीन उदाहरणों में पूर्व रूप सन्धि भी हुई है।

(ख) (हशि च) — यदि रु (र्) के पूर्व ह्रस्व अ हो और परे हश् (वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण तथा य व र ल ह) हो तो रु (र्) के स्थान में 'उ' हो जाता है। फिर अ + उ में गुण सन्धि हो जाती है। जैसे—

मनस् + रथः = मन + र + रथः = मन + उ + रथः = मनोरथः
शिवस् + वन्द्यः = शिव + र् + वन्द्यः = शिव + उ + वन्द्य = शिवोवन्द्यः

अन्य उपयोगी उदाहरण –

रामस् + नमति = रामो नमति
रामस् + हसति = रामो हसति
मृगस् + धावति = मृगो धावति
मेघस् + गर्जति = मेघो गर्जति।

(४) (रोरि)

यदि र् से परे र हो तो पूर्व र् का लोप हो जाता है। उस लुप्त 'र्' से पहले यदि अ, इ, उ हो तो उनका दीर्घ हो जाता है। **जैसे–**

गौर् + रम्भते = गौ रम्भते।
पुनर् + रमते = पुनारमते। **[2020 ZE]**
हरिर् + रम्यः = हरी रम्यः।
हरेर् + रमणम् = हरे रमणम्।

(ख) शब्द-रूप

संज्ञा-शब्द

(१) आत्मन् (आत्मा) पुँलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन		द्विवचन		बहुवचन
प्रथमा	आत्मा		आत्मानौ		आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्		आत्मानौ		आत्मनः
तृतीया	आत्मना		आत्मभ्याम्		आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	**[2020 ZI, ZL, ZN]**	आत्मभ्याम्		आत्मभ्यः
पञ्चमी	आत्मनः		आत्मभ्याम्	**[2020 ZD]**	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः		आत्मनोः		आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	**[2020 ZJ]**	आत्मनोः		आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन्!		हे आत्मानौ!		हे आत्मानः!

(२) राजन् (राजा) पुँलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन		द्विवचन		बहुवचन	
प्रथमा	राजा		राजानौ		राजानः	
द्वितीया	राजानम्		राजानौ		राज्ञः	
तृतीया	राज्ञा	**[2020 ZI]**	राजभ्याम्		राजभिः	**[2019 CM, 20 ZL]**
चतुर्थी	राज्ञे	**[2020 ZA, ZF, ZK]**	राजभ्याम्		राजभ्यः	
पञ्चमी	राज्ञः		राजभ्याम्		राजभ्यः	
षष्ठी	राज्ञः		राज्ञोः		राज्ञाम्	**[2020 ZM]**
सप्तमी	राज्ञि, राजनि	**[2020 ZB]**	राज्ञोः		राजसु	
सम्बोधन	हे राजन्!		हे राजानौ!		हे राजानः!	

(३) सरित् (नदी) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन		द्विवचन	बहुवचन	
प्रथमा	सरित्, सरिद्		सरितौ	सरितः	
द्वितीया	सरितम्		सरितौ	सरितः	
तृतीया	सरिता		सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः	
चतुर्थी	सरिते	**[2020 ZJ]**	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः	
पञ्चमी	सरितः		सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः	
षष्ठी	सरितः		सरितोः	सरिताम्	**[2020 ZC, ZH]**
सप्तमी	सरिति	**[2020 ZK]**	सरितोः	सरित्सु	
सम्बोधन	हे सरित्, हे सरिद्!		हे सरितौ!	हे सरितः!	

(४) नामन् (नाम) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन		द्विवचन	बहुवचन	
प्रथमा	नाम		नाम्नी, नामनी	नामानि	
द्वितीया	नाम		नाम्नी, नामनी	नामानि	
तृतीया	नाम्ना		नामभ्याम्	नामभिः	
चतुर्थी	नाम्ने		नामभ्याम्	नामभ्यः	
पञ्चमी	नाम्नः		नामभ्याम्	नामभ्यः	
षष्ठी	नाम्नः		नाम्नोः	नाम्नाम्	**[2020 ZN]**
सप्तमी	नाम्नि, नामनि		नाम्नोः	नामसु	**[2020 ZC]**
सम्बोधन	हे नाम, नामन्!		हे नाम्नी, नामनी!	हे नामानि!	

(५) जगत् (संसार) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन		द्विवचन	बहुवचन	
प्रथमा	जगत्		जगती	जगन्ति	
द्वितीया	जगत्		जगती	जगन्ति	
तृतीया	जगता		जगद्भ्याम्	जगद्भिः	
चतुर्थी	जगते	**[2020 ZD]**	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः	**[2019 CL]**
पञ्चमी	जगतः		जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः	
षष्ठी	जगतः		जगतोः	जगताम्	
सप्तमी	जगति	**[2020 ZG, ZL, ZM]**	जगतोः	जगत्सु	**[2018 AH, 20 ZE]**
सम्बोधन	हे जगत्!		हे जगती!	हे जगन्ति!	

सर्वनाम-शब्द

(६) सर्व (सब) पुँलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः

चतुर्थी	सर्वस्मै		सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्		सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	**[2019 CL]**	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	**[2020 ZH]**	सर्वयोः	सर्वेषु
सम्बोधन	हे सर्व!		हे सर्वौ!	हे सर्वे!

सर्व

स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**	
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः	
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः	
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः	**[2019 CO]**
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः	
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः	
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्	
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु	
सम्बोधन	हे सर्वा!	हे सर्वे!	हे सर्वाः!	

सर्व

नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
सम्बोधन	हे सर्वम्!	हे सर्वे!	हे सर्वाणि!

(७) यद् (जो) पुँलिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**	
प्रथमा	यः	यौ	ये	
द्वितीया	यम्	यौ	यान्	
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः	**[2020 ZE]**
चतुर्थी	यस्मै **[2018 AH, 20 ZB]**	याभ्याम्	येभ्यः	
पञ्चमी	यस्मात्, यस्माद्	याभ्याम्	येभ्यः	
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्	
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु	

यद्

स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै **[2017 MH, 20 ZA]**	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

यद्

नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्रथमा	यत्, यद्	ये	यानि	
द्वितीया	यत्, यद्	ये	यानि	
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः	
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः	
पञ्चमी	यस्मात्, यस्माद्	याभ्याम्	येभ्यः	
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्	**[2020 ZG]**
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु	

(८) इदम् (यह) पुँलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे	
द्वितीया	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्	
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः	**[2020 ZF]**
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः	
पञ्चमी	अस्मात्, अस्माद्	आभ्याम्	एभ्यः	
षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्	
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु	

इदम्

स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्, एनाम्	इमे, एने	इमाः, एनाः
तृतीया	अनया, एनया	आभ्याम्	आभिः

चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः	
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः	
षष्ठी	अस्याः	अनयोः, एनयोः	आसाम्	**[2019 CR]**
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः, एनयोः	आसु	

इदम्

नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**	
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि	
द्वितीया	इदम्, एनत्	इमे, एने	इमानि, एनानि	
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः	
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः	
पञ्चमी	अस्मात्, अस्माद्	आभ्याम्	एभ्यः	
षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्	**[2017 MJ]**
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु	

(ग) धातु-रूप

परस्मैपदी धातु

(१) स्था (ठहरना)

वर्तमान–लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**		**बहुवचन**	
प्रथम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठतः	**[2020 ZA, ZB]**	तिष्ठन्ति	
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथः		तिष्ठथ	**[2016 SN]**
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठावः		तिष्ठामः	

आज्ञा–लोट् लकार

प्रथम पुरुष	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	**[2017 MK]**	तिष्ठन्तु	
मध्यम पुरुष	तिष्ठ	तिष्ठतम्	**[2016 SL, 17 MH]**	तिष्ठत	**[2020 ZF]**
उत्तम पुरुष	तिष्ठानि	तिष्ठाव		तिष्ठाम	

भूतकाल–लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्		अतिष्ठन्	
मध्यम पुरुष	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	**[2017 ML]**	अतिष्ठत	
उत्तम पुरुष	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव		अतिष्ठाम	

चाहिए–विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्		तिष्ठेयुः	**[2019 CQ]**
मध्यम पुरुष	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्		तिष्ठेत	
उत्तम पुरुष	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव		तिष्ठेम	

सामान्य भविष्यत् – लृट् लकार

प्रथम पुरुष	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तम पुरुष	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

(२) पा (पिब्) पीना

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः **[2018 AH]**	पिबामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब **[2016 SJ]**	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिबः **[2019 CO]**	अपिबतम् **[2017 ML]**	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुष	पिबेः	पिबेतम् **[2016 SK, 17 MJ, MM]**	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः **[2019 CQ, CR]**

(३) कृ (करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ **[2016 SM]**
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	करोतु, कुरुतात्	कुरुताम् **[2016 SN]**	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु, कुरुतात् **[2017 ML]**	कुरुतम्	कुरुत **[2017 MH]**
उत्तम पुरुष	करवाणि **[2017 MN]**	करवाव	करवाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	कुर्यात्	**[2020 ZF]**	कुर्याताम्	कुर्युः	
मध्यम पुरुष	कुर्याः		कुर्यातम्	कुर्यात	
उत्तम पुरुष	कुर्याम्		कुर्याव	कुर्याम	

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अकरोत्	**[2020 ZB]**	अकुरुताम्	अकुर्वन्	
मध्यम पुरुष	अकरोः		अकुरुतम्	अकुरुत	
उत्तम पुरुष	अकरवम्		अकुर्व	अकुर्म	

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	करिष्यति		करिष्यतः	करिष्यन्ति	**[2019 CM]**
मध्यम पुरुष	करिष्यसि		करिष्यथः	करिष्यथ	
उत्तम पुरुष	करिष्यामि		करिष्यावः	करिष्यामः	**[2016 SI, 20 ZE]**

(४) नी (ले जाना)

लट् लकार

	एकवचन		**द्विवचन**	**बहुवचन**	
प्रथम पुरुष	नयति		नयतः	नयन्ति	
मध्यम पुरुष	नयसि	**[2017 MN]**	नयथः	नयथ	
उत्तम पुरुष	नयामि		नयावः	नयामः	

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	नयतु		नयताम्	**[2019 CM]**	नयन्तु	
मध्यम पुरुष	नय	**[2016 SH]**	नयतम्	**[2016 SL]**	नयत	**[2017 ML]**
उत्तम पुरुष	नयानि		नयाव	**[2020 ZD]**	नयाम	

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	नयेत्		नयेताम्		नयेयुः	**[2019 CR]**
मध्यम पुरुष	नयेः		नयेतम्	**[2016 SK, 17 MM]**	नयेत	
उत्तम पुरुष	नयेयम्	**[2019 CL]**	नयेव		नयेम	

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अनयत्		अनयताम्	अनयन्	
मध्यम पुरुष	अनयः	**[2019 CO]**	अनयतम्	अनयत	
उत्तम पुरुष	अनयम्		अनयाव **[2017 MI]**	अनयाम	

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति	
मध्य पुरुष	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ	
उत्तम पुरुष	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः	**[2016 SI, 20 ZG]**

(५) दा (देना)

लट्लकार

प्रथम पुरुष	ददाति		दतः		ददति
मध्यम पुरुष	ददासि		दत्थः	**[2020 ZG]**	दत्थ
उत्तम पुरुष	ददामि		दद्वः		दद्मः

लृट्लकार

प्रथम पुरुष	दास्यति	**[2016 SN, 17 MM]**	दास्यतः		दास्यन्ति
मध्यम पुरुष	दास्यसि		दास्यथः		दास्यथ
उत्तम पुरुष	दास्यामि		दास्यावः		दास्यामः

लङ्लकार

प्रथम पुरुष	अददात्		अदत्ताम्		अददुः
मध्यम पुरुष	अददाः		अदत्तम्		अदत्त
उत्तम पुरुष	अददाम्	**[2019 CP]**	अदद्व	**[2017 MI]**	अदम्म

लोट्लकार

प्रथम पुरुष	ददातु, दत्तात्		दत्ताम्		ददतु	
मध्यम पुरुष	देहि, दत्तात्		दत्तम्		दत्त	**[2018 AH]**
उत्तम पुरुष	ददानि		ददाव		ददाम	

विधिलिङ्लकार

प्रथम पुरुष	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
मध्यम पुरुष	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उत्तम पुरुष	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

(६) चुर् (चोरी करना)

लट् लकार

	एकवचन		**द्विवचन**		**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	चोरयति		चोरयतः		चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	**[2017 MN]**	चोरयथः		चोरयथ
उत्तम पुरुष	चोरयामि		चोरयावः		चोरयामः

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति		चोरयिष्यतः		चोरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि		चोरयिष्यथः		चोरयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चोरयिष्यामि	**[2019 CL]**	चोरयिष्यावः	**[2020 ZE]**	चोरयिष्यामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम पुरुष	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम पुरुष	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयानि	चोरयाव	चोरयाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
मध्यम पुरुष	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उत्तम पुरुष	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

(घ) प्रत्यय

संस्कृत में प्रत्यय लगाकर नये शब्दों का निर्माण होता है। प्रत्यय धातु या शब्दों के बाद लगते हैं। प्रत्यय मुख्यतः **कृत** और **तद्धित** दो प्रकार के होते हैं। यहाँ पर कतिपय प्रत्ययों का परिचय दिया जा रहा है।

(१) कृदन्त (कृत्) प्रत्यय– जहाँ किसी धातु में प्रत्यय जोड़कर नवीन शब्दों का निर्माण किया जाता है, वहाँ कृदन्त (कृत) प्रत्यय होता है तथा इस प्रकार बनाये गये शब्दों को 'कृदन्त' कहा जाता है।

(अ) क्त (त)– भूतकालिक क्रिया तथा विशेषण शब्द बनाने के लिए क्त प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। क्त प्रत्यय भाव और कर्म में होता है अर्थात् कर्त्ता में तृतीया तथा कर्म में प्रथमा विभक्ति तथा क्रिया कर्म के पुरुष, वचन और लिङ्ग के अनुसार होती है। हृतः, दत्तः, लब्धः, कथितः, गतः, प्रेषितः आदि शब्द क्त (त) प्रत्यय के उदाहरण हैं। **जैसे–**

(क) मया पत्रं प्रेषितम् (मैंने पत्र भेजा) (ख) गुरुणा आदेशः दत्तः (गुरुजी ने आदेश दिया)

(ब) क्त्वा (त्वा)– जब किसी क्रिया के हो जाने पर दूसरी क्रिया आरम्भ होती है, तब सम्पन्न हुई क्रिया को 'पूर्वकालिक क्रिया' कहते हैं। हिन्दी में इसका बोध **'करके'** लगाकर होता है। पूर्वकालिक क्रिया का बोध कराने के लिए संस्कृत में धातु के आगे क्त्वा (त्वा) प्रत्यय जोड़ा जाता है। **जैसे–**

धातु		**प्रत्यय**		**कृदन्त**	
कृ	+	क्त्वा	=	कृत्वा	**[2017 MJ]**
दा	+	क्त्वा	=	दत्वा	
गम्	+	क्त्वा	=	गत्वा	
नी	+	क्त्वा	=	नीत्वा	**[2020 ZC]**
पठ्	+	क्त्वा	=	पठित्वा	**[2019 CM, 20 ZD]**
दृश्	+	क्त्वा	=	दृष्ट्वा	
पा	+	क्त्वा	=	पीत्वा	
हन्	+	क्त्वा	=	हत्वा	**[2020 ZA]**

(स) तव्यत् (तव्य), अनीयर् (अनीय)

क्रिया में 'चाहिए अर्थ के लिए तव्यत् और अनीयर् प्रत्ययों का प्रयोग होता है। जैसे–

श्रु + तव्यत् (तक) = श्रोतव्यम् (सुनना चाहिए)।
दा + तव्यत् (तक) = दातव्यः। **[2020 ZD]**
पठ् + तव्यत् (तक) = पठितव्य (पढ़नी चाहिए)।
पठ् + अनीयर (अनीय) = पठनीय (पढ़नी चाहिए या पढ़ने योग्य)।
गम् + अनीयर (अनीय) = गमनीयम्।
पा + अनीयर पठनीयम् = मुझे पुस्तक पढ़नी चाहिए। **[2020 ZG]**
कृ + अनीयर = करणीयः (करने योग्य)। **[2020 ZB]**
पठ् + अनीयर = पठनीय (पढ़ने योग्य)।
दृश् + अनीयर = दर्शनीयः।

(२) तद्धित प्रत्यय– जहाँ किसी शब्द में प्रत्यय जोड़कर नवीन शब्दों का निर्माण किया जाय, वहाँ तद्धित प्रत्यय होता है।

(अ) त्व, तल– संज्ञा और विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए त्व और तल् प्रत्ययों का प्रयोग होता है। **जैसे–**

(क) महत्– महत्त्व, महत्ता।
(ख) प्रभु– प्रभुत्व, प्रभुता।
(ग) गुरु– गुरुत्व, गुरुता। **[2020 ZB]**
(घ) कटु– कटुत्व, कटुता।
(ङ) पशु– पशुत्व, पशुता।
(च) दीन– दीनत्व, दीनता।

(ब) मतुप्, वतुप्– संज्ञा से 'वाला' अर्थ प्रकट करनेवाले विशेषण बनाने के लिए मतुप् प्रत्यय का प्रयोग होता है। मतुप् का 'मत्' कभी-कभी 'वत्' भी हो जाता है। ये शब्द विशेषण होते हैं तथा इनके रूपों में विशेष्य के अनुसार लिङ्ग, वचन और विभक्ति आते हैं। **जैसे–**

					पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	
● बल	+ वतुप्	→	बलवत्	=	बलवान्	बलवती	
● श्री	+ मतुप्	→	श्रीमत्	=	श्रीमान्	श्रीमती	**[2020 ZE]**
● भग	+ वतुप्	→	भगवत्	=	भगवान्	भगवती	
● धी	+ मतुप्	→	धीमत्	=	धीमान्	धीमती	
● गुण	+ वतुप्	→	गुणवत्	=	गुणवान्	गुणवती	
● रस	+ वतुप्	→	रसवत्	=	रसवान्	रसवती	
● पुत्र	+ वतुप्	→	पुत्रवत्	=	पुत्रवान्	पुत्रवती	**[2020 ZA]**
● धन	+ वतुप्	→	धनवत्	=	धनवान्	धनवती	
● मति	+ मतुप्	→	मतिवत	=	मतिमान	मतिवती	**[2020 ZC]**

(ङ) विभक्ति-परिचय

(१) अभितःपरितःसमयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि।

अभितः (चारों ओर), परितः (सब ओर), समया (समीप), निकषा (समीप), हा (शोक के लिए प्रयुक्त), प्रति (ओर) शब्दों के योग में **द्वितीया विभक्ति** होती है।

उदाहरणार्थ–

(क) ग्रामम् अभितः (परितः) वृक्षाः सन्ति। (गाँव के चारों ओर वृक्ष हैं।) **[2016 SM, 19 CN, 20 ZB]**
(ख) ग्रामम् समया विद्यालयः अस्ति। (गाँव के समीप विद्यालय है।) **[2020 ZF]**
(ग) हा दुष्टम्। (हाय दुष्ट)
(घ) विद्यालयम् अभितः वृक्षाः सन्ति। (विद्यालय के दोनों ओर वृक्ष हैं।) **[2020 ZA]**
(ङ) गृहं परितः। (घर के चारों ओर।) **[2019 CP, CR]**
(च) विद्यालयं निकषा जलाशयः अस्ति। (विद्यालय के समीप जलाशय है।) **[2020 ZD, ZG]**
(छ) कृष्णं परितः गावः सन्ति। (कृष्ण के चारों ओर गाय हैं।) **[2020 ZC]**
(ज) परितः कृष्णम्। (कृष्ण के चारों ओर)
(झ) विद्यालयम् परितः उद्यानमस्ति। (विद्यालय के चारों ओर उद्यान हैं)
(ञ) विद्यालयम् परितः वाटिका अस्ति। (विद्यालय के चारों ओर उद्यान हैं) **[2016 SI, SN]**
(ट) कार्यालयम् अभितः भवनानि सन्ति। (कार्यालय के चारों ओर भवन हैं)
(ठ) ग्रामं परितः क्षेत्राणि सन्ति। (गाँव के चारों ओर खेत हैं)

(२) येनाङ्गविकारः

जिस विकृत अंग के द्वारा अंगी (अंगोंवाला) का विकार लक्षित होता है, उस अंग में **तृतीया विभक्ति** होती है।

उदाहरणार्थ–

(क) दिनेशः पादेन खञ्जः अस्ति।	(दिनेश पैर से लँगड़ा है।)	**[2019 CR]**
(ख) मोहनः नेत्रेण काणः अस्ति।	(मोहन नेत्र से काना है।)	**[2016 SK]**
(ग) अक्ष्णा काणः।	(आँख का काना।)	**[2019 CO]**
(घ) सुरेशः शिरसा खल्वाटः।	(सुरेश सिर से गंजा है।)	**[2020 ZC, ZD, ZG]**
(ङ) सः पादेन खञ्जः।	(वह पैर से लँगड़ा।)	**[2016 SM, 17 MK, 18 AH]**
(च) गिरिधरः कर्णेन बधिरः अस्ति।	(गिरिधर कान से बहरा है।)	**[2017 MN, 19 CN, CQ, 20 ZA]**
(छ) भिक्षुकः पादेन खञ्जः अस्ति।	(भिक्षुक पैर से लँगड़ा है।)	**[2019 CL, 20 ZB]**
(ज) देवदत्तः नेत्रेण काणः अस्ति।	(देवदत्त आँख से काना है।)	
(झ) आदर्शः पादेनखञ्जः अस्ति।	(आदर्श पैर से लँगड़ा है।)	
(ञ) अयं छात्रः पादेन खञ्जः।	(यह छात्र पैर से लँगड़ा है।)	

(३) सहयुक्तेऽप्रधाने।

सह के योग में अप्रधान (जो प्रधान क्रिया के कर्त्ता का साथ देता है) में **तृतीया विभक्ति** होती है।

उदाहरणार्थ–

(क) सुनीता पुत्रेण सह गच्छति।	(सुनीता पुत्र के साथ जाती है।)	
(ख) पुत्रेण सह पिता गच्छति।	(पुत्र के साथ पिता जाता है।)	**[2017 MK]**
(ग) रामेण सह सीता वनम् अगच्छत्।	(राम के साथ सीता वन को गयी।)	**[2020 DF]**
(घ) रामः लक्ष्मणेन सह गच्छति।	(राम लक्ष्मण के साथ जाते हैं।)	
(ङ) गुरुणा सह शिष्यः अपि आगच्छति।	(गुरु के साथ शिष्य भी आता है।)	
(च) अहमपि त्वया सार्धं यास्यामि।	(मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।)	**[2016 SH]**
(छ) छात्राः अध्यापकेन सः क्रीडन्ति।	(छात्र अध्यापक के साथ खेलते हैं।)	
(ज) उपाध्यायः छात्रैः समं स्नाति।	(उपाध्याय छात्रों के साथ स्नान करता है।)	**[2018 AH]**
(झ) छात्रेण सह शिक्षकः गच्छति।	(छात्र के साथ अध्यापक जाता है।)	**[2019 CR]**

(४) अपादाने पंचमी

अपादान में पंचमी विभक्ति होती है।

उदाहरणार्थ–

(क) उपाध्यायात् अधीते।	(उपाध्याय के पास पढ़ता है।)
(ख) वृक्षात् फलानि पतन्ति।	(वृक्ष से फल गिरते हैं।)
(ग) वृक्षात् फलं पतंति।	(वृक्ष से फल गिरता है।)
(घ) रामः विद्यालयात् गृहं गच्छति।	(राम विद्यालय से घर जाता है।)
(ङ) वृक्षेभ्यः पुष्पाणि पतन्ति।	(वृक्ष से फूल गिरते हैं।)
(च) सोपानात् अपतत्।	(सीढ़ी से गिरा।)
(छ) त्वं कूपात् जलम् आनय।	(तुम कुएँ से जल लाओ।)
(ज) गंगा हिमालयात् निस्सरति।	(गंगा हिमालय से निकलती हैं।) **[2020 ZE]**

(५) नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषट्योगाच्च।

नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं, वषट् शब्दों के योग में **चतुर्थी विभक्ति** होती है।

उदाहरणार्थ–

(क) श्री गणेशाय नमः।	(गणेश जी को नमस्कार।)	
(ख) तस्मै श्रीगुरवे नमः।	(उन गुरु को नमस्कार।)	**[2017 MI, MJ]**
(ग) रामाय स्वाहा।	(राम के लिए स्वाहा।)	
(घ) इन्द्राय वषट्।	(इन्द्र के लिए भेंट।)	
(ङ) स्वस्ति तुभ्यम्।	(तुम्हारा कल्याण हो।)	
(च) शुकदेवाय नमः।	(शुकदेव को नमस्कार।)	
(छ) सूर्याय स्वाहा।	(सूर्य के लिए स्वाहा।)	
(ज) प्रजाभ्यः स्वस्ति।	(प्रजा का कल्याण हो।)	**[2018 AH, 20 ZG]**
(झ) पुत्राय स्वस्ति।	(पुत्र का कल्याण हो।)	
(ञ) देवेभ्यः स्वाहा।	(देवताओं के लिए स्वाहा।)	**[2020 ZA]**
(ट) कृष्णाय नमः।	(कृष्ण को नमस्कार।)	
(ठ) राधावल्लभाय नमः।	(राधावल्लभ को नमस्कार।)	
(ड) हनुमते नमः।	(हनुमान जी को नमस्कार।)	**[2017 ML]**
(ढ) सीतायै नमः।	(सीता जी को नमस्कार।)	
(ण) तस्मै नमः।	(तुम्हे नमस्कार है।)	**[2019 CN]**
(त) अग्नये स्वाहा।	(अग्नि को स्वाहा।)	**[2020 ZC]**
(थ) रामाय नमः।	(राम को नमस्कार।)	**[2020 ZE]**

(६) षष्ठी शेषे

जहाँ स्वामी तथा सेवक, जन्य तथा जनक, कार्य तथा कारण इत्यादि के मध्य कोई सम्बन्ध दिखाये जाते हैं, वहाँ **षष्ठी विभक्ति** होती है। इस सूत्र का अर्थ है कि अन्य विभक्तियों के आधार पर न बतायी जा सकने वाली बातों को बताने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।

उदाहरणार्थ–

(क) कृष्णस्य पुस्तकम्।	(कृष्ण की पुस्तक।)	
(ख) राज्ञः पुरुषः।	(राजा का पुरुष।)	
(ग) रामस्य माता।	(राम की माता।)	
(घ) सुदामा कृष्णस्य मित्रम् आसीत्।	(सुदामा कृष्ण के मित्र थे।)	
(ङ) कवीनाम् कालिदासः श्रेष्ठः।	(कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।)	**[2018 AH]**
(च) सुमित्रा लक्ष्मणस्य माता अस्ति।	(सुमित्रा लक्ष्मण की माता है।)	
(छ) कृष्णस्य पिता वासुदेवः।	(कृष्ण के पिता वासुदेव।)	
(ज) सुग्रीवः रामस्य सखा आसीत्।	(सुग्रीव राम के सखा थे।)	**[2016 SJ]**
(झ) रामायणस्य कथा।	(रामायण की कथा।)	**[2016 SK]**
(ञ) सुदामा कृष्णस्य मित्रम् आसीत्।	(सुदामा कृष्ण के मित्र थे।)	**[2020 ZD]**

(७) यतश्च निर्धारणम्

यदि किसी की अपने समुदाय में विशिष्टता दिखायी जाती है तो उस समुदायवाचक शब्द में **षष्ठी** या **सप्तमी** विभक्ति होती है।

उदाहरणार्थ–

(क) सुयशः छात्राणां श्रेष्ठः।	(सुयश छात्रों में श्रेष्ठ है।)	**[2020 ZE]**

(ख) गोषु वा कपिला श्रेष्ठा।	(गायों में कपिला श्रेष्ठ है।)	
(ग) बालकेषु सौरभः श्रेष्ठः।	(बालकों में सौरभ श्रेष्ठ है।)	
(घ) नदीनां वा गङ्गा श्रेष्ठा।	(नदियों में गंगा श्रेष्ठ है।)	**[2019 CO]**
(ङ) छात्रासु स्वाती श्रेष्ठा।	(छात्राओं में स्वाती श्रेष्ठ है।)	
(च) काव्येषु नाटकं रम्यं।	(काव्यों में नाटक सुन्दर होता है।)	
(छ) छात्रेषु राकेशः श्रेष्ठः।	(छात्रों में राकेश श्रेष्ठ है।)	**[2017 MH, 19 CQ, 20 ZB]**
(ज) नगरेषु प्रयागः श्रेष्ठः अस्ति।	(नगरों में प्रयाग श्रेष्ठ है।)	
(झ) छात्रासु मंजरी श्रेष्ठा।	(छात्राओं में मंजरी श्रेष्ठ है।)	
(ञ) रामः सर्वेषां श्रेष्ठः।	(राम सभी में श्रेष्ठ है।)	**[2019 CP]**

(च) समास

दो या दो से अधिक शब्दों (पदों) के मेल से एक नवीन शब्द के निर्माण की प्रक्रिया को 'समास' कहा जाता है। जैसे पीतम् अम्बरं यस्य सः (पीले हैं वस्त्र जिसके)। इन शब्दों को मिलाकर एक सामासिक पद बनाया जाता है– पीताम्बरः।

समस्त-पद– समास के नियम से मिले हुए शब्द-समूह को 'समस्त-पद' कहते हैं, जैसे– 'पीताम्बरः' समस्त-पद है।

विग्रह– समास के अर्थ-बोधक वाक्य को 'विग्रह' कहते हैं; जैसे–पीतम् अम्बरं यस्य सः।

सामान्यतया समास के छह भेद हैं– अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीहि तथा द्वन्द्व।

पाठ्यक्रमानुसार निम्नलिखित तीन समासों का विवरण दिया जा रहा है।

(१) अव्ययीभाव समास

जिस समास में पूर्व पद अव्यय हो और उसी के अर्थ की प्रधानता हो, उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं। इसमें पहला पद अव्यय होता है और दूसरा संज्ञा। समस्त-पद अव्यय हो जाता है। अव्ययीभाव का नपुंसकलिङ्ग एकवचन में रूप बनता है।

उदाहरणार्थ–

	समस्त-पद	समास-विग्रह	हिन्दी-अर्थ	
(1)	अनुदिनम्	दिनस्य पश्चात्	दिन के पश्चात्	**[2019 CM, 20 ZC, ZF]**
(2)	प्रतिदिनम्	दिनं दिनंप्रति	प्रत्येक दिन	**[2016 SJ, SM, 17 MK, 19 CN CQ]**
(3)	उपगङ्गम्	गङ्गायाः समीपम्	गंगा के समीप	**[2017 ML, MN, 20 ZD, 18 AH, 19 CO, 20 ZG]**
(4)	उपतटम्	तटस्य समीपे	तट के समीप	
(5)	सहरि	हरेः सादृश्यम्	हरि के सदृश	
(6)	प्रत्यक्षं	अक्ष्णः प्रति	आँखों के सामने	
(7)	अनुरूपम्	रूपस्य योग्यम्	रूप के योग्य	**[2016 SH, SI, 17 MI, MJ]**
(8)	यथाशक्तिः	शक्तिम् अनतिक्रम्य	शक्ति के अनुसार	**[2016 SI, SM, SN, 17 MM, 20 ZA]**
(9)	प्रत्येकः	एकं-एकं प्रति	हर एक	
(10)	यथाकामम्	कामम् अनतिक्रम्य	काम के अनुसार	

(२) कर्मधारय समास

जिस समास में पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है, वहाँ 'कर्मधारय समास' होता है।

उदाहरणार्थ–

	समस्त-पद	समास-विग्रह	हिन्दी-अर्थ	
(1)	कृष्णसर्पः	कृष्णः सर्पः	काला साँप	**[2017 MK]**

(2)	नीलकमलम्	नीलम् कमलम्	नीला कमल	
(3)	श्वेताम्बरं	श्वेतम् अम्बरम्	सफेद वस्त्र	
(4)	घनश्यामः	घन इव श्यामः	घन के समान श्याम	**[2016 SH, SL, 20 ZA]**
(5)	पुरुषव्याघ्रः	पुरुष एव व्याघ्रः	पुरुषरूपी व्याघ्र	
(6)	सज्जनः	सत्यः जनः	सच्चा व्यक्ति	
(7)	कुपुत्रः	कुत्सित पुत्रः	बुरा पुत्र	
(8)	रक्तवस्त्रम्	रक्तम् वस्त्रम्	लाल वस्त्र	
(9)	नीलाश्वः	नीलः अश्वः	नीला घोड़ा	**[2017 MN, 20 ZG]**
(10)	पीतकमलम्	पीतम् कमलम्	पीला कमल	
(11)	रक्ताम्बरम्	रक्तं अम्बरम्	लाल वस्त्र	
(12)	पीतवस्त्रम्	पीतं वस्त्रम्	पीला वस्त्र	**[2017 MJ]**
(13)	नीलाम्बुजम्	नीलं अम्बुजम्	नीला कमल	**[2019 CN]**
(14)	महाजनः	महान् चासौ जनः	महान् जन	
(15)	विद्याधनम्	विद्या एव धनम्	विद्यारूपी धन	**[2017 MH, MI, 19 CO]**
(16)	महात्मा	महान् चासौ आत्मा	महान् आत्मा	
(17)	नीलोत्पलम्	नीलम् उत्पलम्	नीला उत्पल	**[2020 ZE]**

(३) बहुव्रीहि समास

जब दोनों समस्त-पदों में से किसी भी पद के अर्थ की प्रधानता नहीं होती, वरन् ये किसी अन्य पद के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं और उसी पद के अर्थ की प्रधानता होती है, तब वहाँ 'बहुव्रीहि समास' होता है। इसमें विग्रह करते समय 'यत्' शब्द के रूपों (यस्य, येन, यस्मै आदि) का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरणार्थ–

	समस्त-पद	**समास-विग्रह**	**हिन्दी-अर्थ**	
(1)	महात्मा	महान आत्मा यस्य सः	जिसकी आत्मा महान् हो वह	
(2)	त्रिनेत्रः	त्रय नेत्राणि यस्य सः	तीन नेत्र हैं जिसके	
(3)	लम्बोदरः	लम्बम् उदरं यस्य सः	लम्बा है उदर जिसका	**[2016 SJ, 17 MI, MJ]**
(4)	गजाननः	गजः इव आननः यस्य सः	गज के समान मुख है जिसका	**[2017 MJ]**
(5)	महाधनः	महान् धनः यस्य सः	महान् धन है जिसका वह	
(6)	गदाहस्तः	गदा हस्ते यस्य सः	गदा है हाथ में जिसके वह	
(7)	पीताम्बरः	पीतम् अम्बरं यस्य सः	पीले हैं वस्त्र जिसके	**[2016 SM, SN, 17 MK]**
(8)	दशाननः	दश आननानि यस्य सः	दस मुख हैं जिसके	**[2016 SI, 19 CP, 20 ZB]**
(9)	यशपाणिः	यशं पाणौ यस्य सः	यश है हाथ में जिसके	
(10)	जितेन्द्रियः	जितानि इन्द्रियाणि येन सः	जीत ली हैं इन्द्रियाँ जिसने	
(11)	चक्रपाणिः	चक्रं पाणौ यस्य सः	चक्र है हाथ जिसका	**[2020 ZD]**
(12)	चन्द्रशेखरः	चन्द्रः शेखरे यस्य सः	चन्द्र है जिसके शेखर पर	
(13)	नीलकण्ठः	नीलः कण्ठः यस्य सः	नीला है कण्ठ जिसका	**[2020 ZF]**
(14)	वीणापाणिः	वीणा पाणौ यस्य सः	वीणा है हाथ में जिसके	